स्वयंसेवी संस्थाओं की समुदाय में सहभागिता एवं अपेक्षाएँ

डॉ उर्वशी, समाज कार्य विभाग, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

जिस प्रकार विधाता की सर्वोत्तम सृष्टि मेधावी मानव है इसी प्रकार मानव की सर्वोत्तम सृष्टि मानव समाज और उसकी विचित्र घटनायें हैं। मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है वह जिज्ञासा से भरपूर ज्ञान पिपासु है इसलिए यह सच ही कहा गया है कि मानव प्रकृति का सबसे आश्चर्यजनक भाग है कि यह बुद्धिजीवी, ज्ञान पिपासु मानव केवल प्रकृति का ही नहीं बल्कि अपना अध्ययन भी करता है परन्तु स्वयं अपना, अपने समाज का, अपने व्यवहारो का या फिर सामाजिक घटनाओं का अध्ययन मानव के लिए और भी रोचक, अत्यन्त आश्चर्यजनक अनुभवों से भरपूर और समृद्ध होता है लेकिन यह अध्ययन मनमाने ढ़ंग से नहीं अपितु निरीक्षण, परीक्षण का प्रयोग पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा किया जाता है।

समस्या का कथन

राज्य, बाजार और समाज में अर्न्तसम्बन्धो ने एक ओर तो आर्थिक विकास के नये आयाम का जन्म दिया है और दूसरी ओर समाजिक जाटिलताएँ भी हुई हं। बदलते हुए परिवेश मे स्वैच्छिक प्रयासों के सामने नई चुनौतियॉ और जटिलताएँ प्रस्तुत हैं इन प्रयासों के वाहक संगठनों से समाज की अपेक्षाओं में परिवर्तन हुआ है।

सकारात्मक परिवर्तन के लिए निरंतर प्रयास कर रहे स्वैच्छिक संगठनों की विविध कार्य भूमिकाओं में सामाजिक विकास, सशक्तीकरण के सरकारी प्रयासों में भागीदार है तो कहीं नीतिगत परिवर्तन के लिए संर्घषरत हैं, कही निश्चित कार्यक्रमों के क्रियावन्यन में लगे हुये है तो वहीं सामूहिक पहल की सहजता प्रदान करने की भूमिका है। सामाजिक विकास मे स्वैच्छिक प्रयासों की भूमिका और महत्व तो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य है किन्तु इसके बावजूद भी स्वैच्छिक कार्यविधा और स्वैच्छिक विकास संस्थाओं पर लगातार नियन्त्रण बढ़ाने की कोशिशें स्वैच्छिक प्रयासों के मार्ग में निरन्तर बाधा उत्पन्न करती है। 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के अन्तिम दशक में देश में औपचारिक तौर पर लागू हुई उदारीकरण की नीति और वैश्वीकरण ने सामुदायिक विकास के लिए उत्कृष्ट स्वैच्छिक प्रयासों के सामने नये अवसरों के साथ नई चुनौतियों को प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय नीतियों पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई पड़ने लगे है। राज्य की नीतियॉ बाजार से प्रभावित है और बाजार समकालीन अर्थव्यवस्था पर आधारित है। भूमण्डलीकरण के दौर में स्थानीय मुददों पर अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकृष्ट करना तथा वृहद समाजिक संदर्भो को स्थानीय स्तर पर उतारना भी स्वैच्छिक संगठनों के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। राज्य की परिवर्तित हो रही भूमिकाओं के परिणामस्वरूप एक ओर बाजारीकरण की प्रक्रिया हावी हो रही हैं वह दूसरी ओर समाजिक विसंगतियों से पहले ही व्यापक विभेद और व्यापक होने लगे है। स्वैच्छिक संस्थाओं के समक्ष अपनी पहचान और स्वायता को बनाये रखने तथा अपने प्रभाव में वृद्धि के यक्ष प्रश्न चुनौती बनकर सामने खड़े हैं।

स्वैच्छिक संगठन अब केवल परोपकारी या धर्मार्थ संगठन मात्र नहीं है बल्कि बदलती हुई परिस्थितियों के साथ विभिन्न मुद्दों पर निरन्तर कार्य कर रहे है कार्यात्मक बढ़ते हुये अपेक्षाओ और दान संस्थाओं के दबाव में स्वैच्छिक संस्थाओं ने भी कार्य पद्धति को अपनाया है। सभी स्वैच्छिक संस्थाएँ अपने समाजिक विश्लेषण और दृष्टिकोण के आधार पर जन्म लेती है और अपन मिशन के आधार पर कार्य कर रही है सभी संगठनों के अपने मूल्य और मान्यताएँ होती हैं किन्तु मुख्य रूप से देखे तो स्वैच्छिक संस्थाएँ मूलतः वाह्य वातावरण को प्रभावित कर ने के लिए कार्य करती है ताकि परिवर्तन के लिए निर्धारित उदद्देश्य को प्राप्त कर सकें। यहाँ सार्थक प्रश्न जन्म लेता है। कि क्या संस्थाएँ बिना बाहरी कारणों से प्रभावित हुये एकाकी रूप से अलग कार्य कर सकती है या बाहरी वातावरण और परिवेश के परिवर्तन से अछूती रहती है ? प्रश्नों के जवाब अलग–अलग हो सकते है किन्तु सामान्य तौर पर स्वैच्छिक प्रयासों की बाहरी और आन्तरिक दोनों कारणों से प्रभावित करते है वर्तमान संदर्भो में तो बाहरी परिवेश के बदलाव में अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश भी सम्मिलित है।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

1 उत्तरदाताओं का पार्श्वचित्र प्रस्तुत करना
2 उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना
3 सामुदायिक विकास में संस्थाओं की भूमिका का पता लगाना
4 संस्था द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं की जानकारी करना
5 संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रयों एवं गतिविधियों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
6 समुदाय के पर्यावरण, सहभागिता एवं समन्वय की जानकारी करना
7 स्वयंसेवी संस्थाओं के विषय में लोगों की मनोवृत्तियों का पता लगाना

उपकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित महत्वपूर्ण कल्पनात्मक विचार यह है कि आज भी भौतिकवादी युग में जहां मनुष्य की विभिन्न आवष्यकतायें, अभिलाषायें पूरी हो रही हैं वहीं पीडित मानवता के कष्टों की रोकथाम करने के लिये सरकारी एवं गैर सरकारी तंत्र द्वारा जो प्रयास किये जा रहे हैं उनके विषय में अधिकांष जनसंख्या जागरूक नहीं है।

लोगों में सहभागिता, समन्वय की कमी के कारण लोग विभिन्न सरकारी नीतियों का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं परिणामस्वरूप उनमें योजनाओं के प्रति अनभिज्ञता एवं अज्ञानता व्याप्त है।

आँकड़ों के स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के दोनों स्रोतों का प्रयोग किया गया है, क्षेत्रीय स्रोत के रूप में उत्तरदाताओं से सीधी सूचना प्राप्त की गई है तथा प्रलेखीय स्रोत के रूप में उत्तरदाताओं एवं संस्थाओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण, अभिलेख, पुस्तकों से (किये गये अध्ययनों से) लेखन सामग्री प्राप्त की गई है। यथेष्ठ सामग्री को इस अध्ययन में पिरोया गया है जिससे इसे सामयिक एवं पूर्ण साहित्यिक रूप में सुसज्जित किया जा सके।

साक्षात्कार पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में विषय की गम्भीरता को देखते हुए साक्षात्कार पद्धति को अपनाना उचित प्रतीत हुआ। इस अध्ययन में उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क करके उनके जीवन के विभिन्न पक्षों के साथ विषय–वस्तु से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर केवल इसी प्रविधि द्वारा प्राप्त होने की सम्भावना थी। अनुसंधानकर्ता ने साक्षात्कार हेतु अध्ययन से सम्बन्धित वार्ड के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर उत्तरदाताओं से मिलकर उनसे बातचीत कर तथ्यों को प्राप्त किया। साक्षात्कार के समय

ISSN -2393-8048, July- December 2018, Submitted in October 2018, iajesm2014@gmail.com
अनुसंधानकर्ता को इस बात का पूरा ध्यान था कि उत्तरदाताओं से ऐसे प्रश्न न पूँछे जायें जो उनके व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करते हों और जिनका उत्तर देने में वे असुविधा महसूस करें।

अनुसंधानकर्ता ने साक्षात्कार पद्धति में व्यक्तिगत साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग किया न कि सामूहिक साक्षात्कार।

अवलोकन पद्धति

अवलोकन पद्धति में तथ्यों का संकलन अनुसंधानकर्ता की चेतना के ऊपर आधारित होता है कि वह अपने विवेक का कितना इस्तेमाल कर रहा है। कभी–कभी कुछ प्रश्नों के उत्तर में उत्तरदाता के तेवर अचानक बदल जाते हैं या वह बहुत उग्र हो जाता है या फिर संकोच में आ जाता है, एक चतुर अनुसंधानकर्ता उत्तरदाता की भावभंगिमा को तुरंत पढ़ लेता है।

अध्ययन के यंत्र

तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया। इसके द्वारा ठोस एवं यथार्थ सूचनाओं की प्राप्ति सम्भव होती है। इसके द्वारा उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित करके सूचनायें एकत्रित की गईं।

प्रतिदर्शन का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्ष चयन में समानुपातिक स्तरीकृत प्रतिदर्षन का प्रयोग किया गया है जिसके आधार पर उद्देष्य पूर्ण प्रतिदर्षन द्वारा 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

समस्त संकलित आँकड़ों को वर्गीकृत एवं सारिणीबद्ध करने के पश्चात इनका विश्लेषण दोनों आधारों (सांख्यिकीय एवं तार्किक) पर किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण में औसत तथा प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सर्वाधिक उत्तरदाता (59.33 प्रतिशत) निरक्षर हैं। केवल 40.67 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित पाये गये। जिसमें 11. 66 प्रतिशत प्राइमरी स्तर तक, 7.67 प्रतिशत जूनियर हाई स्कूल तक, 3.57 प्रतिशत हाईस्कूल तक तथा 2.67 प्रतिशत इण्टरमीडियट स्तर तक शिक्षित हैं। लगभग आधे (49.33 प्रतिशत) उत्तरदाता विवाहित हैं। 17.33 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित हैं तथा शेष 26.67 प्रतिशत विधुर, 1.67 प्रतिशत तलाकशुदा तथा सबसे कम (5.00 प्रतिशत) पृथक हैं। 35.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की मासिक आय 900 से 1200 रुपये के बीच है। उनकी औसत आय मात्र 1206.5 रुपये है।

उत्तरदाताओं के परिवारों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है जिससे यह ज्ञात होता है कि अधिसंख्य उत्तरदाताओं (60.67 प्रतिशत) के परिवार एकाकी हैं। बहुसंख्य (91.00 प्रतिशत) परिवारों में 4–8 सदस्य है। परिवार के आकार का औसत 5.33 पाया गया। समस्त परिवारों के सदस्यों में 51.44 पुरूष तथा 48.56 प्रतिशत महिलाएँ हैं। अधिकांश परिवार के सदस्य (38.78 प्रतिशत) 15–39 वर्ष आयु वर्ग के हैं। अधिसंख्य सदस्य (58.65 प्रतिशत) निरक्षर हैं। महिलाओं में 66.12 प्रतिशत तथा पुरूषों में 51.61 प्रतिशत निरक्षरता है। सर्वाधिक सदस्य (51.18 प्रतिशत) विवाहित तथा 0.69 प्रतिशत पुनः विवाहित हैं। 25.48 प्रतिशत सदस्यों का व्यवसाय फुटकर मजदूरी से सम्बन्धित है। अधिसंख्य (63.89 प्रतिशत) परिवारों की मासिक आय 2500–5000 रु. के बीच है तथा 32.67 प्रतिशत परिवारों की आय 2500 रूपये तक है। परिवार की मासिक आय का औसत रूपये 2788.33 पाया गया। 20.67 प्रतिशत परिवार 900–1100 रु0 तथा 20.33 प्रतिशत परिवार 1900–2900 रु0 के बीच भोजन पर व्यय करते हैं। 75.33 प्रतिशत परिवार मकान पर बिल्कुल व्यय नहीं करते। 84.00 प्रतिशत परिवार 100–300 रु0 के बीच कपड़ों पर व्यय करते हैं। 37.33 प्रतिशत परिवार बच्चों की शिक्षा पर कुछ भी व्यय नहीं करते, 29.00 प्रतिशत परिवार बच्चों की शिक्षा पर 100–300 रु. तक व्यय करते हैं। 54.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रकार का प्रयास किया है। बहुसंख्य (76.07 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने बताया कि वे सामाजिक, आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अधिक काम करते हैं। इसके पश्चात् 68.71 प्रतिशत उत्तरदाता बचत करते हैं तथा 60.12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि वे बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दे रहे हैं।

स्वयंसेवी संस्थाओं के विषय में उत्तरदाताओं की राय की जानकारी की गई साथ ही साथ कार्यप्रणाली एवं उनके द्वारा समुदाय में सहभागिता का भी बोध किया गया है जिससे यह ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 49.34 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वयंसेवी संस्थाओं की समुदाय में कार्य करने की स्थिति सामान्य है तथा सबसे कम 3.33 प्रतिषत के अनुसार कार्य करने की स्थिति अच्छी हैं। सर्वाधिक 28.00 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वयंसेवी संस्था जागरूक्ता फैलाती है। सर्वाधिक 23.00 प्रतिषत उत्तरदाता निराश्रितों मे जनसहभागिता को प्रोत्साहित करती है तथा सबसे कम 10.67 प्रतिषत उत्तरदाओं के अनुसार यह निर्बल तथा निराश्रितों की मदद करती हैं। अधिसंख्य 73.67 प्रतिषत उत्तरदाओं के अनुसार स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा महिलाओं के लिए कोई कार्य नहीं किया जाता है। अधिसंख्य 67.09 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा महिलाओं को परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी दी जाती है तथा सबसे कम 3.36 प्रतिषत के अनुसार उनमें सामुदायिक भावना जागृत की जाती है। अधिसंख्य उत्तरदाता 67.67 प्रतिषत के अनुसार स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा जनकल्याण कार्यो को बढावा नहीं मिलता है। अधिसंख्य 62.89 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा किये गये जनकल्याण कार्यों में सहभागिता को प्रोत्साहन मिलता है। अधिसंख्य 71.33 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वयंसेवी संस्थाएं समाज के सर्वांगीण विकास में सहायक नहीं है। अधिसंख्य 68.60 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वयंसेवी संस्थाएं समाज के सर्वागीण विकास के लिए उनकी समस्याओं का समाधान व्यष्टि एवं समष्टि स्तर पर करते है, 61.63 प्रतिषत के अनुसार सामुदायिक विकास एवं सहभागिता में उपचारक हैं, 56.98 प्रतिषत के अनुसार सहायक के रूप मे तथा 38.37 प्रतिषत के अनुसार पथ–प्रर्दषक के रूप में स्वयंसेवी संस्थाएं समाज का सर्वांगीण विकास करती है। अधिसंख्य उत्तरदाता 63.67 प्रतिषत स्वयंसेवी संस्थाओं से आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने की अपेक्षा रखते हैं तथा सबसे कम 44.33 प्रतिषत जनसहभागिता हेतु समुदाय को प्रोत्साहित करने की अपेक्षा रखते हैं। 78.67 प्रतिषत उत्तरदाओं को समुदाय के आन्तरिक एवं बाहय संसाधनों की जानकारी नहीं है। बहुसंख्य 79.69 प्रतिषत को परिवार नियोजन सम्बन्धी जानकारी है। सर्वाधिक 44.67 प्रतिषत उत्तरदाताओं को संसाधनों के सम्बन्ध में जानकारी सम्बन्धियों से, 32.33 प्रतिषत को पडोसियों से, 31.33 प्रतिषत को अन्य साधनों से, 21.00 प्रतिषत को सामुदायिक केन्द्रों से, 17.33 प्रतिषत को गैर सरकारी संस्था से तथा 13.00 प्रतिषत को सरकारी संस्थाओं से संसाधनों की जानकारी प्राप्त हुई है। बहुसंख्य 82.

ISSN -2393-8048, July- December 2018, Submitted in October 2018, iajesm2014@gmail.com
33 प्रतिषत उत्तरदाता इससे संतुष्ट नहीं है, मात्र 17.67 प्रतिषत उत्तरदाता स्वयंसेवी संस्थाओं की कार्यप्रणालियों से संतुष्ट है। सर्वाधिक 32.33 प्रतिषत उत्तरदाता सामुदायिक विकास में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका से असन्तुष्ट हैं। सर्वाधिक 43. 00 प्रतिषत उत्तरदाता के अनुसार जनसामान्य स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका के विषय में उदासीन है। 69.67 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रम एवं प्रभावकारी नही हैं। अधिसंख्य 72.33 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार समुदाय के सहयोग एवं समन्वय में स्वयंसेवी संस्थाओं की कोई भूमिका नही है,27.67 प्रतिषत के अनुसार स्वयंसेवी संस्थाओं की समुदाय के सहयोग एवं समन्वय में भूमिका है। बहुसंख्य 77.33 प्रतिषत उत्तरदाताओं की स्वयंसेवी संस्थाओं की गतिविधियों में भाग लेने की कोई भूमिका नही है, मात्र 22.67 प्रतिषत उत्तरदाताओं के अनुसार उनकी स्वयंसेवी संस्थाओं की गतिविधियों में भाग लेने की भूमिका है। बहुसंख्य 83.00 प्रतिषत उत्तरदाता स्वयंसेवी संस्थाओं की गतिविधियों से लाभ नही उठाते हैं मात्र 17.00 प्रतिषत उत्तरदाता स्वयं सेवी संस्थाओं गतिविधियों से लाभ उठाते हैं। अधिसंख्य उत्तरदाता स्वयंसेवी संस्थाओं से स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी के प्रति जागरूक होते है।

सुझाव

1 स्वयंसेवी संस्थाओं के विषय में लोगों को जागरूक किया जाना चाहिये।
2 व्यष्टि एवं समष्टि स्तर पर समुदाय के विकास के लिये स्वयंसेवी संस्थाओं को निर्देष दिये जाने चाहिये।
3 समुदाय के विकास के लिये जनसहभागिता के साथ–साथ सामुदायिक भावना से ओतप्रोत होकर कार्य किया जाना चाहिये।
4 कल्याणकारी कार्यक्रमों के विषय में लोगों में जागरूकता का प्रसार किया जाये।
5 सरकारी तंत्र के द्वारा स्वयंसेवी संस्थाओं के विषय में जनता को जागरूक किया जाये।
6 सामाजिक क्रिया के सफल आयोजन हेतु आवष्यक कार्यक्रमों का कार्यान्वयन किया जाये।
7 नीतियों एवं कार्यक्रमों को समुदाय के लोगों के पर अनावष्यक न थोपा जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अल्टेकर, ए. एस., दि पोजीशन आफ वूमेन्स इन हिन्दू सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, बनारस , 1956
- आल इण्डिया वूमेन्स कान्फ्रेन्स, रिपोर्ट्स फार दि इयर्स फ्रांस 1930–1975
- अपदिता आश्रम, भारत में महान महिलायें, दहोलोमेथा वर्थ सेन्चुरी में कोरियल, पश्चिमी बंगाल, 1962
- आचार्य, एस, ''इम्प्लॉयमेन्ट ऑफ वूमेन इन इण्डिया'' ए हिस्टारिकल रिव्यू, 1901–1951, वाल्यमू 22, न0 3, अक्टूबर, 1979
- अम्बेन्नर, जे0, '' चेन्जेज इन इकोनामिक एक्टिविटी आफ मेल्स ऐण्ड फिमेल्स इन इण्डिया'', डिमोग्राफी इण्डिया, नं. 42, 1975
- अकर, चन्द्राः वूमेन ऐण्ड एजूकेशन, कंगन पेज, निकोल्स पब्लिशिंग लंदन, 1984
- अफसजर, हेलेहः वूमेन वर्क ऐण्ड आडियोलोजी इन द थर्ड वर्ल्ड, टविस्टॉक पब्लिकेशन, लंदन, 1985
- अग्रवाल, बेंगः वर्क पार्टीशिपेशन आफ रूरल वूमेन इन द थर्ड वर्ल्डः द डाटा ऐण्ड कान्सेप्शनल बेसिस इन्टीट्यूट आफ डेवलपमेंट स्टडीज, संसेक्स, 1981
- अग्रवाल, सुशीला (एडि):स्टेटस आफ वूमेन, प्रिन्टवेल पब्लिशर्स,जयपुर (इण्डिया), 1988
- आर्डन आर. बर्धा एन. एस., ''वर्किंग वूमेन ऐण्ड हैवी मैरिज, अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशियालोजी'', वाल्यूम–74 , 1968–69
- इण्डिया वूमेन्स चार्टर आफ राइटस ऐण्ड ड्यूटीज (एज रेक्टीफाइड बाई दि स्टैण्डिंग कमेटी आफ दि आल इण्डिया वूमेन्स कानफरेन्स एट इट्स मीटिंग हेल्ड इन, कलकत्ता, जुलाई, 1946)
- इक्स वीकसी–''दि वर्किग वूमेन्स'' ए स्पेशन इश्यू वाल,31, नं. 41 (अक्टूबर, 8–14, 1977) ऐण्ड वाल 40, न. 13 (अप्रैल 7, 1978)
- इवरेट, जे. एम. वूमेन ऐण्ड सोशल चेन्ज इन इण्डिया (न्यू डेल्ही, 1979)
- इप्स्टीन, सी. एफ. वूमेन्स प्लेस, केलिफोर्निया, 1970
- इकोनामिक ऐण्ड सोशल स्टेटस आफ वूमेन वर्कर्स इन इण्डिया, गर्वमेन्ट आफ इण्डिया,
- लेबर ब्यूरो, मिनिस्ट्री आफ लेम्बर ऐण्ड इम्प्लायमेन्ट, पब्लिकेशन न. 15, 1953
- इण्टरनेशनल लेबर कान्फरेन्स रिपोर्ट 6, (प) 48 सेशन, सिक्थ आइटम आन दि एजेन्डा,
- समाजकार्य इतिहास दर्शन एंव प्रणलियॉ – डा0 सिह सुरेन्द्र एवं पी0 डी0 मिश्रा
- वूमेन वर्कर्स इन ऐ चेन्जिंग वर्ल्ड, जेनेवा, 1964
- रिपोर्ट 5, (प), 49 सेशन, (1965), फिफ्थ आइटम आन दि एजेण्डा, दि इम्पलॉयमेन्ट आफ वूमेन विद फेमिली रेस्पान्सिबिलिटी, जेनेवा, 1964
- एग्निव, विजय, इलीज वूमेन इन इण्डिया पॉलिटिक्स, डेल्हीः विकास पब्लिकेशन हाऊस, 1986